डॉ कृष्ण चन्द्र शास्त्रिणा विरचितम्

तीर्थ श्रादध एवं तर्पण प्रकाश

(देवी भागवतानुसार प्रामाणिक तर्पण विधि सहित)

संपादक

पं कुलदीप अत्रि

श्रीविद्या पीठम् , बहादुरगढ़ नगरम्

SVSPBN--#09-23-02

मूल्य- ५०₹

पुस्तक मिलने का पता-

१. श्रीविद्या पीठम् , सै 28 बहादुरगढ़ हरियाणा

२. आचार्य संदीप अत्रि- हनुमान मंदिर भिवानी बाईपास, जींद

३.पं पवन शर्मा - नगूरां जीन्द

४. सियाराम बुक स्टाल- श्री जयराम विद्यापीठ के सामने ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र

प्रकाशक-

श्रीविद्यापीठम्, सै 28 बहादुरगढ़ नगरम्

।।उद्बोधन ।।

तीर्थ पर श्राद्ध करवाने सभी जाते हैं लेकिन सरल श्राद्ध विधि हेतू हिंदी में पुस्तक का अभाव है, इसी कारण इस लघु ग्रंथ का प्रयास किया गया है। तर्पण देव- ऋषि -पितृ प्रसन्नता एवं कृपा प्राप्ति का सरलतम माध्यम है । लेकिन जो तर्पण पद्धतियां छपी हैं उनमें ब्रहमा जी के तीन पुत्रों का तर्पण तो दिया है लेकिन सनत्कुमार का नाम उनमें नही है। यह पंक्तिभेद बिल्कुल अनुचित है। समस्त तर्पण संबंधित ग्रंथों,कारिका, निबंधों का अनुशीलन क्रम में देखा कि श्रीमद्देवी भागवत पुराण स्कंध एकादश अध्याय बीस में सनत्कुमार सहित अनेक अन्य ऋषियों का नामोल्लेख है जो अन्यत्र नहीं है। मां विशालहृदया और सबकी पोषक होती हैं । अतः देवी भागवत के अनुसार यहां सम्पूर्ण तर्पण दिया गया है जो संभवतः आज तक किसी ने भी प्रकाशित नहीं किया है । विस्तृत तर्पण के समस्त देव ऋषि पितृदेव सबको सुख -सम्पत्ति देवें ऐसी प्रार्थना है। किसी भी ज्ञाताज्ञात त्रुटि हेतू क्षमा करें एवं सूचित करें। ग्रंथ लिखने हेतु बार बार प्रार्थना करने वाले प्रिय शिष्य संदीप अत्रि (भागवदाचार्य, संगीताचार्य) तथा कुलदीप अत्रि (तन्त्रागमाचार्य) को शुभाशीर्वाद है,जिनकी जिज्ञासा पर यह लघु ग्रंथ लिखा गया।

लेखक-

डॉ कृष्ण चन्द्र शास्त्री

राधाष्टमी

२३.९.२३

।।तीर्थ श्राद्ध विधि।।

तीर्थ को देखते ही प्रणाम करें। स्नान करके तीर्थ को नारियल,फल,पुष्प आदि अर्पित करके पितृश्राद्ध करें।

दर्भपवित्र धारण करके आचमन करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥

इससे पुण्डरीकाक्ष भगवान् का स्मरणपूर्वक श्राद्ध द्रव्यों का प्रोक्षण करें । विष्णु जी को मन से प्रार्थना करें।

ॐ तीर्थभूम्यै नमः । ॐ तीर्थदेवताभ्यो नमः । ओं भगवत्यै गयायै नमः । ॐ भगवते गदाधराय नमः । ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशि ।

संकल्प -ॐ अद्य मम समस्त पितृणां सद्गति प्राप्ति पूर्वक अक्षयतृप्ति हेतवे सद् गतीनाञ्च श्री विष्णुलोक प्राप्तये अमुकतीर्थ प्राप्ति निमित्तकं पिण्डदान -मात्र श्राद्धमहं करिष्ये ।

गायत्री तीन बार जपें । **ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य: एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो-नम:** तीन बार पढे । तब अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बांया घुटना धरती पर मिलाकर अपने सामने पिण्डदान के लिए वेदी पर ढाक आदि के पत्ते दक्षिणाग्र नोक करके रखें ।

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका । पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥ बोलकर तीर्थजल से सींचन करें। फिर वेदी मध्य में दर्भमूल से **ॐ अपहताऽसुरा रक्षांसि वेदिषद** रेखा खींचे।

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात् । इस मन्त्र से उल्मुक धूप घुमाएं , फिर हाथ धोकर दक्षिणाग्र कुशा बिछाएं । फिर दौने में जल तिल गन्ध पुष्प डालकर - " **ॐ अद्यामुकगोत्र अस्मत्पिता अमुकशर्मा/वर्मा/गुप्त वसुरूप अत्र अवनेनिक्ष्व ते स्वधा"** कुशमूल से पितृतीर्थ से पिता के लिए अवनेजन जल एक पत्ते पर रखी कुशा पर छोड़ें ।

पुनः द्वितीय दौना लेकर - "**ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितामह अमुकशर्मा/वर्मा /गुप्त रूद्र रूप अत्र अवनेनिक्ष्व ते स्वधा"** कुशमध्य से पितामह के लिए अगले पत्ते पर जल छोड़ें ।

पुनः "ॐ अमुकगोत्र अस्मत् प्रपितामह अमुकशर्मा/वर्मा गुप्त आदित्यरूप अत्र अवनेनिक्ष्व ते स्वधा" कहकर कुशाग्र से प्रपितामह के लिए जल छोड़ें ।

ऐसे ही अवनेजन जल माता/पितामही/प्रपितामही तथा अपने वंश में भ्राता -पितृव्य - पुत्र- पुत्री- स्नुषा- तथा दूसरे गोत्र वाले मातुल, मातामह,प्रमातामह, मातुलानी, मातामही आदि के लिए छोड़ें। प्रत्येक के लिए दौना अलग-अलग हो।

फिर तिल-घृत-मधु-शर्करा मिश्रित जौं से गूंथकर आंवले के बराबर पिंड बनाकर क्रम से उन उन कुशाओं पर जहां जिनके लिए अवनेजन जल दिया था निम्न वाक्यों से छोड़ें -

एक पिण्ड वामहस्त में लेकर दक्षिणहस्त में रखकर तीन कुशा लेकर

पिता - ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अस्मत्पिता अमुकनाम्नः तस्य अक्षयतृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-

रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

कहकर प्रथम कुशमूल से पितृतीर्थ से पिता के लिए दें ॥ १ ॥

पुनः पिण्ड कुशाएं लेकर -

दादा - ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अस्मत् पितामह अमुक नाम्न: अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु- तिल-जल प्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

फिर परदादा जी के लिए -

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अस्मत् प्रपितामह अमुकनाम्न: अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यन्नमयं अमृतरूपं-तिल-मधु-जल प्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

वृद्ध परदादा - ओं अद्यामुकगोत्रस्य अस्मद्वृद्ध प्रपितामह अमुकनाम्न: अक्षय तृप्त्यर्थं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल-जल-प्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

पुत्र -- ॐ अद्य अमुक गोत्रस्य अस्मत् पुत्र अमुकनाम्नः तस्य अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

भ्राता - ॐ अद्य अमुक गोत्रस्य अस्मत् भ्राता अमुकनाम्नः तस्य अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-

रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

चाचा --- ॐ अद्य अमुक गोत्रस्य अस्मत् पितृव्य अमुक नाम्नः तस्य अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

ताऊ - ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अस्मत ज्येष्ठ पिता अमुकनाम्नः तस्य अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

माता - ॐ अद्यामुक गोत्राया अमुक देव्या मम मातु: अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल-जल-प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ॥

दादी - ॐ अद्यामुक गोत्रा अमुक नाम्नी देवी मम पितामही तस्या अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल जल प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

परदादी - ॐ अद्यामुक गोत्राया अमुक नाम्न्या देव्या मम प्रपितामह्या अक्षय तृप्त्यर्थमिद हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु- तिल-जल-प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

वृद्ध परदादी -ॐ अद्यामुक गोत्रा अस्मद्वृद्ध प्रपितामही अमुकनाम्नी तस्या अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयंअमृतरूपं मधु-तिल जलादिभिः प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

पत्नी - ॐ अद्यामुक गोत्राऽमुक नाम्नी देवी मम पत्नी तस्या अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल जल प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

दूसरा नाना गोत्र -

नाना - ओं अद्यामुकगोत्र द्वितीय गोत्रस्य अस्मन्मातामह अमुकनाम्न: अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल जलादि प्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

परनाना - ॐ अद्यामुकगोत्र द्वितीय गोत्रस्या अस्मत्प्रमातामह अमुकनाम्नो अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल-जलादि प्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

वृद्ध परनाना - ओं अद्यामुकगोत्र द्वितीयगोत्रस्या अस्मत् वृद्ध प्रमातामह अमुकनाम्न: अक्षय-तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल जलादिसिक्तं पिण्डं तस्मै स्वधा ।

मामा -- ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अस्मत् मातुल: अमुकनाम्नः तस्य अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयम् अमृत-रूपं मधुतिलादि प्रोक्षितं पिडं ते स्वधा नमः ।

नानी - ॐ अद्यामुक गोत्रा द्वितीयगोत्रा अस्मन्मातामही अमुकनाम्नी देवी तस्या अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल-जलादिप्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

परनानी -ॐ अद्यामुक गोत्रा द्वितीयगोत्रा अस्मत्प्रमातामही अमुकनाम्नी देवी तस्या अक्षय-तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-तिल जलादिभिः प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

वृद्ध परनानी -ॐ अद्यामुक गोत्रा द्वितीयगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही अमुकनाम्नी देवी तस्या अक्षय तृप्त्यर्थमिदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु तिल जलादिभिः प्रोक्षितं पिण्डं तस्यै स्वधा ।

ज्ञाताज्ञात ---

ॐ अज्ञात नाम गोत्राः समस्ताश्रित पितरस्तीर्थ श्राद्ध एष वः पिण्डः स्वधा ॥

ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डदानेन शाश्वतीम् ।।

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

तेषां पिण्डो मया दत्त अक्षय्यमुपतिष्ठतु ||

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च ।

गुरुश्वशुर-बंधूनां ये चान्ये बान्धवाः स्मृताः ॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।

तेषां पिण्डो मया दत्त अक्षय्यमुपतिष्ठतु ।।

फिर पिण्डों के नीचे रखी कुश की जड़ से - ॐ लेपभाग-भुजस्तृप्यन्तु । कहकर हाथ पोंछकर जल से हाथ धो लें ।

फिर आचमन करके विष्णु स्मरण करके - ॐ तत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम् ऐसा पढ़कर , थोड़ा वामावर्त होकर उत्तर मुख होकर श्वास रोककर वापिस घूमकर ॐ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत', यह जपकर श्वास छोड़ें।

फिर प्रत्यवनेजन जल दौने में गंध पुष्प मिश्रित जल लेकर समस्त पिंडों पर थोड़ा थोड़ा डालें -

ॐ अमुक गोत्रास्मत्पितृपितामहादयः अमुक तीर्थश्राद्ध पिंडेषु अत्र प्रत्यवनेनिध्वं वः स्वधा ।

ॐ अद्यामुकगोत्रा मातामहादयः तीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा ।

ॐ अद्यामुकगोत्राः समस्त आश्रित पितरः तीर्थ श्राद्धे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा ॥

प्रार्थना -ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमः वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो व पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो द्वेष्म ।

फिर पिण्डों पर षोडशोपचार पूजन करें

वस्त्र -ॐ एतद्वः पितरो वासः । ॐ एतद्वो मातरो वासः । ॐ एतद्वो मातामहादयो वासः । ॐ एतद्वः पितृव्यादयो वासः । इति

पिंडों पर गन्ध-पुष्प-तुलसी- धूप-दीप-ताम्बूल- पूगीफल-यज्ञोपवीत दक्षिणा से पूजा करें।

फिर दक्षिणाग्र जल/दुग्ध धारा दें -

ॐ ऊर्ज्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तृप्पयत मे पितृन् ।

फिर सभी पिण्डाधिकारी पितरों के लिए नामगोत्रोच्चारण करके सतिल- जल से तर्पण करें ।

क्षमा प्रार्थना करें - ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य: एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो-नम: तीन बार पढे ।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।

यत् सुकृतं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

फिर पिण्डों को सूंघकर पात्र में रखकर तीर्थ में दक्षिण की ओर मुंह करके प्रवाहित करें। दक्षिणा दान करें।

विष्णु जी प्रार्थना करें -

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

इति आचार्य पं डॉ कृष्ण चन्द्र शास्त्री विरचितं तीर्थ-श्राद्ध-विधिप्रकरणम्।

तर्पण प्रयोग

संकल्प -- .... समस्त पितृदेवता प्रसाद सिध्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणमहं करिष्ये।

देव-तर्पण

यजमान दोनों हाथों की अनामिका अँगुलियों में पवित्री धारण करें।

ॐ आगच्छन्तु महाभागाः, विश्वेदेवा महाबलाः ।

ये तपर्णेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

जल में चावल डालें । कुश-मोटक सीधे ही लें ।। यज्ञोपवीत सव्य (बायें कन्धे पर) सामान्य स्थिति में रखें। तर्पण के समय अंजलि में जल भरकर सभी अँगुलियों के अग्र भाग के सहारे अर्पित करें। इसे देवतीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक देवशक्ति के लिए एक-एक अंजलि जल डालें। पूवार्भिमुख होकर देते चलें।

ॐ ब्रह्मादयो देवाः आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।

ॐ ब्रह्म तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्।

ॐ प्रजापतितृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्।

ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐकारस्तृप्यताम्

ॐ वषट्कारस्तृप्यताम् ॐ भूर्भुवः स्वस्तृप्यताम् ॐ सावित्री तृप्यताम्

ॐ गायत्री तृप्यताम् ॐ यज्ञास्तृप्यन्ताम् ॐ द्यावापृथिव्यन्तरिक्षाणि तृप्यन्ताम् ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्

ॐ सांख्याचार्यास्तृप्यन्ताम् ॐ सिद्धास्तृप्यन्ताम्

ॐ पुराणाचायार्स्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचायार्स्तृप्यन्ताम्।

ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्

ॐ पवर्ता स्तृप्यन्ताम् ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्

ॐ गन्धवार्स्तृप्यन्ताम् ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्

ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ विप्रास्तृप्यन्ताम्

ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्।

ॐ सुपणार्स्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्।

ॐ भूतग्रामः चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

दिव्य ऋषि तर्पण उत्तराभिमुख किया जाता है। जल में जौ डालें। जनेऊ कण्ठ की माला की तरह रखें। कुश हाथों में आड़े कर लें। कुशों के मध्य भाग से जल दिया जाता है। अंजलि में जल भरकर कनिष्ठा (छोटी उँगली) की जड़ के पास से जल छोड़ें, इसे प्राजापत्य तीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक सम्बोधन के साथ दो-दो अंजलि जल दें-

ॐ शतर्चिस्तृप्यताम् ॐ माध्यमस्तृप्यताम् ॐ गृत्समदस्तृप्यताम्

ॐ विश्वामित्रस्तृप्यताम् ॐ वामदेवस्तृप्यताम् ॐ अत्रिस्तृप्यताम्

ॐ भरद्वाजस्तृप्यताम् ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् ॐ प्रगाथस्तृप्यताम्

ॐ मरीचिस्तृप्याताम्। ॐ अंगिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्।

ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्।

ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्। ॐ पावमान्यस्तृप्यताम्

ॐ क्षुद्रसूक्तास्तृप्यन्ताम् ॐ महासूक्तास्तृप्यन्ताम् ॐ सनकस्तृप्याताम्

ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् ॐ सनातनस्तृप्यताम् ॐ सनत्कुमारस्तृप्यताम्

ॐ कपिलस्तृप्यताम् ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ॐ वोढुस्तृप्यताम्॥2॥

ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्॥2॥

पितृ ऋषि तर्पण - दक्षिणाभिमुख हों। वामजानु (बायाँ घुटना मोड़कर बैठें) जनेऊ अपसव्य (दाहिने कन्धे पर सामान्य से उल्टी स्थिति में) रखें। कुशा दुहरे कर लें। जल में तिल डालें। अंजलि में जल लेकर दाहिने हाथ के अँगूठे के सहारे जल गिराएँ। इसे पितृ तीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक पितृ को तीन-तीन अंजलि जल दें।

ॐ सुमन्तु तृप्यताम् ॐ जैमिनी तृप्यताम् ॐ वैशम्पायनस्तृप्यताम्

ॐ पैलस्तृप्यताम् ॐ सूत्राणि तृप्यन्ताम् ॐ भाष्यास्तृप्यन्ताम्

ॐ भारतं तृप्यन्ताम् ॐ महाभारतं तृप्यन्ताम् ॐ धर्माचार्यास्तृप्यन्ताम्

ॐ जानन्ति तृप्यन्ताम् ॐ बाहवि तृप्यन्ताम् ॐ गार्ग्यस्तृप्यन्ताम्

ॐ गौतमस्तृप्यताम् ॐ शाकलस्तृप्यताम् ॐ बाभ्रव्यस्तृप्यताम्

ॐ माण्डव्यस्तृप्यताम् ॐ माण्डूकेयस्तृप्यताम् ॐ गार्गी वाचक्नवी तृप्यन्ताम् ॐ वडवा तृप्यन्ताम् ॐ प्रातिथेयी तृप्यन्ताम्

ॐ सुलभा तृप्यन्ताम् ॐ मैत्रेयी तृप्यन्ताम् ॐ कहोलस्तृप्यताम्

ॐ कौषीतकस्तृप्यताम् ॐ महाकौषीतकस्तृप्यताम्

ॐ भारद्वाजस्तृप्यताम् ॐ पैंग्यस्तृप्यताम् ॐ महापैंग्यस्तृप्यताम्

ॐ सुयज्ञस्तृप्यताम् ॐ सांख्यायनस्तृप्यताम् ॐ ऐतरेयस्तृप्यताम्

ॐ महैतरेयस्तृप्यताम् ॐ बाष्कलस्तृप्यताम् ॐ शाकलस्तृप्यताम्

ॐ सुजातवक्त्रस्तृप्यताम् ॐ औदवाहि तृप्यन्ताम् ॐ सौजामि तृप्यन्ताम्

ॐ शौनकस्तृप्यताम् ॐ आश्वलायनस्तृप्यताम्

ॐ समस्ताचार्यास्तृप्यन्ताम्

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वाधा नमः॥3॥

ॐ सोमस्तृप्यताम्, इदं तिलोदकं तस्मै स्वाधा नमः॥3॥

ॐ यमस्तृप्यताम्, इदं तिलोदकं तस्मै स्वाधा नमः॥3॥

ॐ अयर्मा स्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वाधा नमः॥3॥

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वाधा नमः॥3॥

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वाधा नमः॥3॥

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वाधा नमः॥3॥

यम तर्पण -

ॐ यमाय नमः॥3॥ ॐ धमर्राजाय नमः॥3॥ ॐ मृत्यवे नमः॥3॥

ॐ अन्तकाय नमः॥3॥ ॐ वैवस्वताय ॐ कालाय नमः॥3॥

ॐ सवर्भूतक्षयाय नमः॥3॥ ॐ औदुम्बराय नमः॥3॥

ॐ दध्नाय नमः॥3॥ ॐ नीलाय नमः॥3॥ ॐ परमेष्ठिने नमः॥3॥

ॐ वृकोदराय नमः॥3॥ ॐ चित्राय नमः॥3॥ ॐ चित्रगुप्ताय नमः॥3॥

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से यम देवता को नमस्कार करें-

ॐ यमाय धमर्राजाय, मृत्यवे चान्तकाय च।

वैवस्वताय कालाय, सवर्भूतक्षयाय च॥

औदुम्बराय दध्नाय, नीलाय परमेष्ठिने।

वृकोदराय चित्राय, चित्रगुप्ताय वै नमः॥

मनुष्य तर्पण

अस्मत्पिता (पिता) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्पितामह (दादा) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्प्रपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मन्माता (माता) अमुकी देवी अमुकगोत्रा गायत्रीरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा सावित्रीरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्प्रत्पितामही (परदादी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्सापतनमाता (सौतेली माँ) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

द्वितीय गोत्र तर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल की तीन-तीन अंजलियाँ पितृतीर्थ से दें तथा-

अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो आदित्यरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा आदित्यारूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

इतर तर्पण -जिनको आवश्यक है, केवल उन्हीं के लिए तर्पण कराया जाए-

अस्मत्पत्नी अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्कन्याः (बेटी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्पितृव्यः (चाचा) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्सापतनभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्पितृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मान्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्सापतनभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद श्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद श्वशुरपतनी (सास) अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद्गुरु अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद् आचार्यपतनी अमुकी देवी अमुकगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत् शिष्यः अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मत्सखा अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद् आप्तपुरुषः (सम्मानीय पुरुष) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

अस्मद् पतिः अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः॥3॥

निम्न मन्त्र से पूर्व विधि से प्राणिमात्र की तुष्टि के लिए जल धार छोड़ें-

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा, नागा गन्धवर्राक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः, कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥

जलेचरा भूनिलया, वाय्वाधाराश्च जन्तवः। प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु, मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

नरकेषु समस्तेषु, यातनासु ु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्, दीयते सलिलं मया॥

ये बान्धवाऽबान्धवा वा, येऽ न्यजन्मनि बान्धवाः। ते सवेर् तृप्तिमायान्तु, ये चास्मत्तोयकांक्षिणः। आब्रह्मस्तम्बपयर्न्तं, देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मातृमातामहादयः॥

अतीतकुलकोटीनां, सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकाद्, इदमस्तु तिलोदकम्। ये बान्धवाऽबान्धवा वा, येऽ न्यजन्मनि बान्धवाः। ते सवेर् तृप्तिमायान्तु, मया दत्तेन वारिणा॥

वस्त्र-निष्पीडन - शुद्ध वस्त्र जल में डुबोएँ और बाहर लाकर मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्य भाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़ें।

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता, अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं, वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्म तर्पण -

ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय, सांकृतिप्रवराय च।

गंगापुत्राय भीष्माय, प्रदास्येऽहं तिलोदकम्॥

अपुत्राय ददाम्येतत्, सलिलं भीष्मवमर्णे॥

एक एक अर्घ्य दें -

ब्रह्मणे नमः, ॐ विष्णवे नमः ॐ रुद्राय नमः, ॐ सवित्रे नमः, ॐ मित्राय नमः, ॐ वरुणाय नमः ।

सूर्य को अर्घ्य दें - ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे । जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने।।

इसके बाद दिग्पालों को नमस्कार करें -

१-ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः । २-ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः । ३-ॐ दक्षिणायै नमः, ॐ यमाय नमः । ४ ॐ नैर्ऋत्ये नमः, ॐ निर्ऋतये नमः । ५-ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ वरुणाय नमः । ६-ॐ वायव्यै नमः, ॐ वायवे नमः । ७-ॐ उदीच्ये नमः, ॐ कुबेराय नमः । ८-ॐ ऐशान्यै नमः, ॐ ईशानाय नमः । ९-ॐ ऊध्वयि नमः ॐ ब्रह्मणे नमः । १०-ॐ अधरायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः ।

इस तरह दिशाओं और देवताओंको नमस्कार कर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दे

ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ ओषधिभ्यो नमः । ॐ वाचे नमः । ॐ वाचस्पतये नमः । ॐ महद्भ्यो नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ अद्भ्यो नमः । ॐ अपाम्पतये नमः । ॐ वरुणाय नमः ।

समर्पण - निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान्को समर्पित करे-

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्- ब्रह्मार्पणमस्तु

तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान्का स्मरण करते हुए पाठ करे-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ यत्पादपङ्कजस्मरणात् नामजपादपि । न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । तर्पण-विधि समाप्त ।

देवी भागवत --- तर्पणं चैव देवानां ततः कुर्यात्प्रदक्षिणम् । प्रजापतिश्च ब्रह्मा च वेदा देवास्तथर्षयः ॥ ११ सर्वाणि चैव छन्दांसि तथोङ्कारस्तथैव च । वषट्कारो व्याहृतयः सावित्री च ततः परम् ॥ १२ गायत्री चैव यज्ञाश्च द्यावापृथिवी इत्यपि । अन्तरिक्षं त्वहोरात्राणि च सांख्या अतः परम् ॥ १३ सिद्धाः समुद्रा नद्यश्च गिरयश्च ततः परम् । क्षेत्रौषधिवनस्पत्यो गन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥ १४ नागा वयांसि गावश्च साध्या विप्रास्तथैव च । यक्षा रक्षांसि भूतानीत्येवमन्तानि कीर्तयेत् ॥ १५ अथो निवीती भूत्वा च ऋषीन्सन्तर्पयेदपि । शतर्चिनो

माध्यमाश्च गृत्समदस्तथैव च ॥ १६ विश्वामित्रो वामदेवोऽत्रिर्भरद्वाज एव च। वसिष्ठश्च प्रगाथश्च पावमान्यस्ततः परम् ॥ १७ क्षुद्रसूक्ता महासूक्ताः सनकश्च सनन्दनः । सनातनस्तथैवात्र सनत्कुमार एव च ॥ १८ कपिलासुरिनामानौ वोहलिः पञ्चशीर्षकः । प्राचीनावीतिना तच्च कर्तव्यमथ तर्पणम्।। सुमन्तुजैमिनिर्वैशम्पायनः पैलसूत्रयुक्।भाष्यभारतपूर्वं च महाभारत इत्यपि ॥ २०धर्माचार्या इमे सर्वे तृप्यन्त्विवति च कीर्तयेत् । जानन्ति बाहविगार्ग्यगौतमाश्चैव शाकलः ॥ २१ बाभ्रव्यमाण्डव्ययुतोमाण्डूकेयस्ततः परम् । गार्गी वाचक्नवी चैव वडवा प्रातिथेयिका ॥ २२ सुलभायुक्तमैत्रेयी कहोलश्च ततः परम् । कौषीतकं महाकौषीतकं वै तर्पयेत्ततः ॥ २३ भारद्वाजं च पैङ्ग्यं च महापैङ्गयं सुयज्ञकम्। सांख्यायनमैतरेयं महैतरेयमेव च ॥ २४ बाष्कलं शाकलं चैव सुजातवक्त्रमेव च । औदवाहिं च सौजामिं शौनकं चाश्वलायनम् ॥ २५ ये चान्ये सर्व आचार्यास्ते सर्वे तृप्तिमाप्नुयुः ।। --- श्रीमद् देवीभागवत स्कन्ध ११ अध्याय २०.

इति नगूरां(जीन्द) वासतव्येन आचार्य पं डॉ कृष्ण चन्द्र शास्त्रिणा विरचित: तीर्थश्राद्ध एवं तर्पण ग्रंथ: समाप्त:। जनार्दनार्पणमस्तु।